

ॐ

✓ श्री ३ वज्र यामि नि गुरु ४२२ ~

धमरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

DH 261

ॐ नमो शायककृतिआयागाचार्ये ॥ ० ॥ नविकतान
कलेनवप्रपद्यमीगकवर्मपुताधुनशासकजीयय
लाचनकोधकजाजमृषि ॥ पुनमासिभुलकजीयक
मिम १ ॥ जमिजोदरुईगविलुषकजीयदुमेषविनी
दाधियसकजी ॥ जमिपूष्कैपालविभुनयजी ॥ पुनमा

मि ॥ २ ॥ गुनसुनमननकृपादमतिविलभुफनहान
पुवाधकजा ॥ नमृषियतिरुनकतानकजिपुनमासि
॥ ३ ॥ सजनागतवत्सनजगकजीपुनराननलीइवन
तिरुकजी ॥ जमिधाजभुधाजलयनैकजी ॥ पुनमासि
॥ ४ ॥ वलधर्मजननपुवाधकजीयनलभुभाद

धिरुक्क नी ॥ विलं धर्म उपाय पु बा ध क नी ॥ पु न मा
मि ॥ १ ॥ शुभ ना ल म रु ज सु पु स न क निरु व वं ध न ३४
व्य वि ना भ क नी ॥ उ य रु मि उ पा य वि भु ध क नी ॥ पु न मा
मि ॥ ७ ॥ जू मि ध्या ग म दा व ल व स ध नी ग ग ला पु म स ध
स्व रा व क नी ॥ च उ व क वि दा ग स मा धि क नी पु न मा मि

॥ १ ॥ पु र्वं क रु ग रु च र्म व ल क नि डं सा क ना जि नि क
धा ग र्ज न रु नीः नि र्वं वि श्र वि ना सि नी ॥ का मी स थ नि
दू र्ध स ता स नी द वि य क रु मि न मा मि सै न मा नि र्व नि
र्यं म या सा धि नी ॥ ६ ॥ रु मि ध्या य क रु मि श्रा य ता ना
रु गा जि का ना मा धा रु ज स रु य नि म मा फ ४५

DH261

धर्मरत्न बज्जाचायं दुरत श्री महाबिहार